

सुबह की तलाश

(छत्तीसगढ़ को छात्र राजनीति में नई रोशनी की खोज)

[illegible]

छत्तीसगढ़ स्टुडेंट्स' फ़ेडरेशन

प्रथम प्रकाश : अगस्त, 1990

छात्र समाज में व्यापक चर्चा के लिए
प्रसारित

सहायता राशि : २ रुपये

प्रकाशक : छत्तीसगढ़ स्टुडेंट्स' फेडरेशन

केम्प नं. १, दल्ली राजहरा

जिला दुर्ग

मध्य प्रदेश

पिन - ४९१-२२८

मुद्रक : वजाज प्रिन्टर्स, दल्ली राजहरा

स्वतन्त्रता संघर्ष के युवा शहीद



खुदीराम बोस



भगत सिंह

छत्तीसगढ़ की छात्र राजनीति में एक नई रोशनी चाहिए

दुनिया का इतिहास हमें यह शिक्षा देता है कि देश नायक जब दिशाहीनता से ग्रसित होते हैं, तब एक अराजकता की स्थिति पनपती है। आज देश में बेरोजगारी का हाहाकार मचा हुआ है, मंहगाई मध्यमवर्गीय परिवारों के गले घोंटने पर उतारू है। इस समय देश की वागडोर एक जागरूक, सृजनशील समूह के संवेदनशील पहल से सम्हाला जाना चाहिए।

छात्र एवं नवयुवक ही आज ऐसा समूह है, जिन्हें दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ देश के परिवर्तनवादी आन्दोलन को नेतृत्व देना होना। नवयुवकों के नश-नश में खून सात समुन्दर की लहरों जैसे तरंगित है, ये ऐसे कौम है, जो जात-पात, भेद-भाव, ऊँचा-नीचा की फरक को तोड़कर समानता लाने की सद्भावना से भरपूर है। इसीलिए तो दुनिया के सारे महापुरुषों अपने छात्र जीवन से हो “वसुधैव कुटुम्बकम्” के सिद्धांत से ओत-प्रोत होकर सामाजिक कार्यों में जुट रहे। छात्र एवं नवयुवक १९१७ की ऐतिहासिक अक्टूबर क्रांति को विजय की मंजिल तक पहुंचाने के लिए सारी शक्ति लगा दिये थे। चीन, यूरोप एवं लेटिन अमेरिका के देशों में भी अतीत एवं वर्तमान समय में तमाम जनवादी आन्दोलन में ये जान फूंकते रहे हैं। आज के समय के दुनिया के प्रियतम लोकनेता नेलसन मंडेला की पुत्री, एक खिलता हुआ फूल जिन्नि मंडेला दक्षिण आफ्रिका के नवयुवक-नवयुवतियों के दिलों में देश प्रेम की प्रेरणा भरने में अगुआई कर रही हैं।

भारत की आजादी के इतिहास भी यह साक्ष्य देता है कि १९ वर्ष का बालक शहीद खुदीराम बोस, २२ वर्ष का नवयुवक भगतसिंह और सैकड़ों क्रांतिकारियों ने अपने तप्त खून गुलामी का जजार तोड़ने में अर्पित किये थे। नेताजी सुभाषचंद्र बोस, जवाहरलाल नेहरू भारत में “स्टुडेंट्स फेडरेशन” नामक संस्था बनाकर छात्र आंदोलन को अंग्रेज साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलन के साथ जोड़कर एक नया जश पैदा किये थे।

आज यह निश्चित है कि, कांग्रेसी कुशासन ने देश की प्रगति को

रास्ता दिखाने में असफल रहे । दिशाहीनता सारे देश में छा गई है । देश-वासियों के सामने भविष्य अनिश्चित है । दिशाहीनता भ्रष्टाचार की जननी है, इसलिए न्यायालय से लेकर गांव के मुखिया तक सर्वत्र भ्रष्टाचार का बोलबाला है । सवाल साफ है कि सही दिशा कौन देगा ?

कौन हिम्मत के साथ नाव को बहाव के खिलाफ चलाकर सही लक्ष्य में पहुंचायेगा ? छात्र एवं नवयुवकों को इसका जवाब ढूंढना होगा । पहल करना होगा और कोशिशों के कठिनाईयों को झेलते हुए दीर्घकालीन और अल्कालीन कार्यक्रमों के जरिये अपनी मंजिल तय करना होगा और यह जनवादी पद्धति से व्यापक किसान-मजदूरों के साथ एकात्म होकर ही संभव हो सकता है ।

जापान एक छोटा सा देश है । जापान की प्राकृतिक सम्पदा छत्तीसगढ़ की तुलना में नहीं के बराबर है । फिर भी जापान सिर्फ एशियाई देशों में ही नहीं, बल्कि सारी दुनिया में अपनी अग्रगति का झंडा बुलंद किया । ८० करोड़ का देश भारत आज कोई भी मायने में जापान की मुकाबला में खड़ा नहीं हो सकता । भारत में जहां ४० करोड़ नवयुवक अपने अनिश्चित जीवन से डगमगा रहे हैं, वहां कमरून जैसे छोटा सा देश फुटबाल में बाजी मार सकता है । कितना दुर्भाग्य है हमारा !

जब दो भियेतनाम एक हो रहा है, दो कोरिया एक हो जाने की तमन्ना लेकर आगे बढ़ रहा है, बर्लिन की दीवार टूटकर दो जर्मनी को एक बना रहा है, उस समय भारत में वर्तमान राजनीति अस्थिरता के माहोल में मौका पाकर खौफ को राजनीति करने वालों ने हिन्दू और मुसलमान कहकर, हरिजन और सवर्ण कहकर गरीब से गरीब को लड़ाने का साजिस जारी रखा हुआ है । यद आज हमें गंभीरता से लेना होगा ।

सारे भारत में विदर्भ, छत्तीसगढ़, झारखंड, पश्चिम उड़ीसा एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश सबसे पिछड़े हुए इलाके हैं इन इलाकों के राजनैतिक नेता-गण इन इलाकों के जनता को दबू बनाकर रखने में जुटे हुए हैं । इन क्षेत्रों के राजनैतिक नेता, जो कुकर्मों में लगे हुए हैं, ये कोई पार्टी विशेष की नहीं है । ये सभी पार्टियों के उच्च पद पर आसीन हैं । ये सब "चोर-

चोर मीसेरा भाई" हैं ।

हम छत्तीसगढ़ के छात्र एवं नवयुवक कम से कम अपनी छत्तीसगढ़ की विनाश के खिलाफ आवाज उठा सकते हैं । लोहा पत्थर, चुन पत्थर, यूरेनियम, कोरण्डम, टीन, क्वार्ट्ज, फ्लोराइट, डोलोमाइट, तांबा कोयला का विशाल भंडार के बावजूद छत्तीसगढ़ के नवयुवक बेरोजगारी की दृष्टि को क्यों मंजूर करेंगे ? महानदी के अपार जल राशि, अरपा, इन्द्रावती, शिवनाथ क्या छत्तीसगढ़ के कृषि योग्य भूमि को सिंचित करने के लिए काफी नहीं हैं ? फिर भी प्रतिवर्ष छत्तीसगढ़ के गांव के नवयुवक अपनी जनम भूमि छोड़कर कब तक परदेश पलायन करते रहेंगे ? गांव से नवयुवक भाग-कर शहर की ओर या नौकरी के लालच में दलालों की चक्कर में फँसकर अपने खो लुटाते रहेंगे ? शहर के तथाकथित टेक्नोक्रेट और बुरोक्रेट और अनैतिक गैरकानूनी धंधा करने वाले नवधनाढ्य वर्ग के पुत्रों ने अपनी धन बस और पहुंच का फायदा उठाकर पूरा समाज खो कलुषित कर रहे हैं । छात्र जगत भी इनकी हरकतों के कारण अपराधीकरण के माहोल से मुक्त नहीं हो पाया है । हर राजनैतिक पुरुषों के कब्जे में तथाकथित कुछ छात्र देता रहते हैं, जो प्रशासन की नजर के सामने ही हत्या, बलात्कार जैसे घिनौना रायों में लिप्त रहते हैं सफेद कुर्तों ने उन्हें यह अधिकार दिला देता है कि वे बेरोकटोक अपनी अवारा-गर्दी चला सकें । इनमें से दो चार हमारे प्रदेश की राजनैतिक बागडोर भी सम्भाल लेते हैं कई तो मंत्री भी बन जाते हैं ।

इन परिस्थितियों में छत्तीसगढ़ के छात्र आंदोलन में एक बुनियादी परिमर्तन की आवश्यकता है । छात्र राजनैतिक बागडोर किसी भी हालत में नई धनाढ्य वर्गों के हाथ में नहीं जाना चाहिए । मूल्यों पर आधारित वैज्ञानिक सिद्धांत से लैश होकर नैतिकता की मान अनावरत बढ़ाते रहते हुए व्यापक जन समुदाय की आशा आकांक्षाओं को मूर्त रूप देने के लिये छात्र एवं युवा शक्ति को तत्पर रहना होगा ।

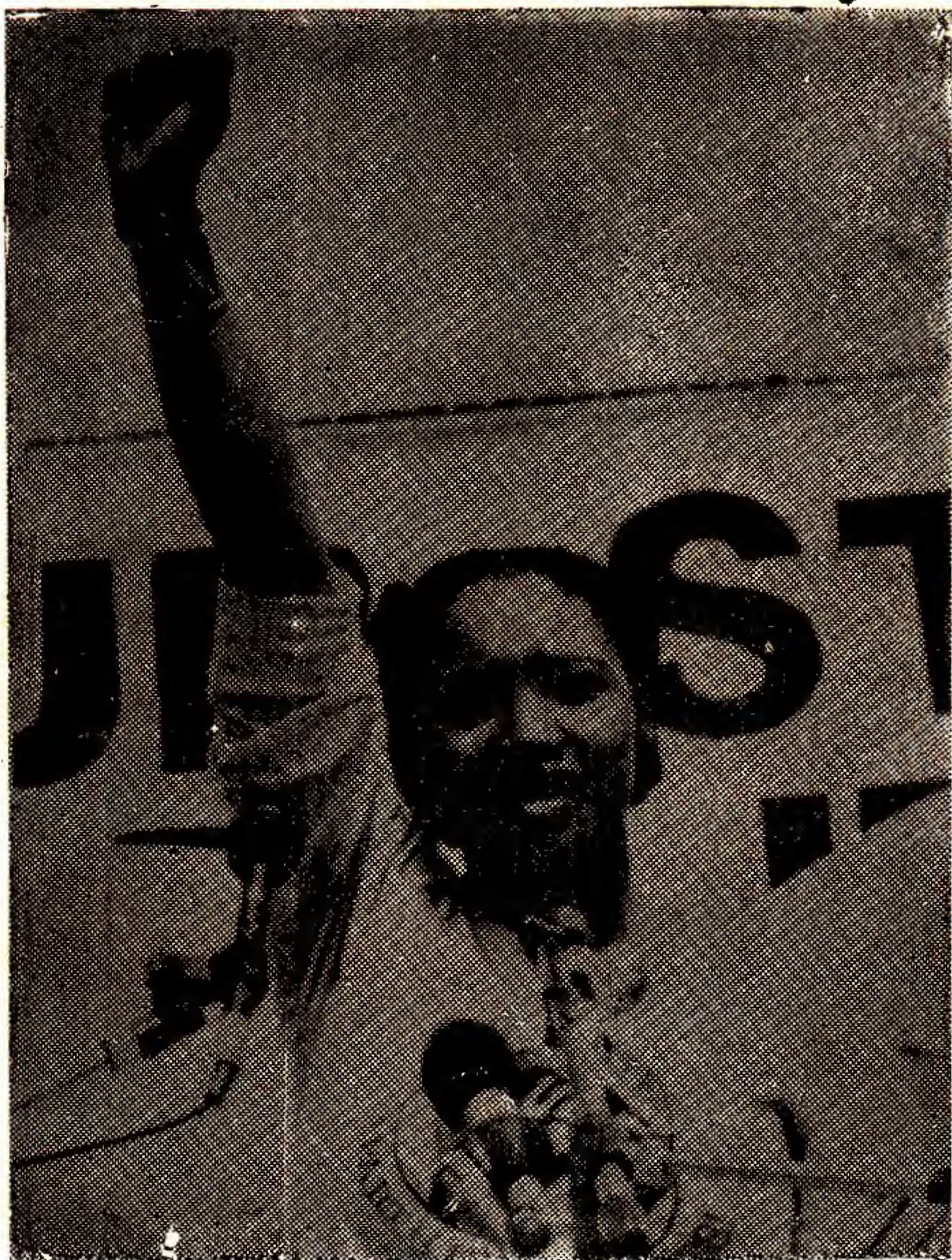
बहुतों ने अन्याय करना पसंद नहीं करते हैं । अनैतिक कार्य करने के लिये हिचकिचाते हैं । अपराध की रास्ता से दूर रहते हैं यह अच्छा प्रवृत्ति है ।

फिर भी बहुतों ने अन्याय सहने का आदि रहते हैं। अन्याय करने वालों के खिलाफ आवाज नहीं उठाते हैं। “कौन झमेला में पड़ेगा” कहकर अन्यायकारी शक्तियों को बेरोकटोक अनैतिक एवं अपराध मूलक कार्य चलाने का मौका देते हैं यह अत्यन्त खराब बात है। अन्याय करना एवं अन्याय को सहना, दोनों ही गलत प्रवृत्ति हैं। छात्र एवं नवयुवक वर्गों को अन्याय सहने की प्रवृत्ति को घृणा करना चाहिए। अन्याय करने वालों के खिलाफ आवाज उठाना चाहिए।

छत्तीसगढ़ के वर्तमान पीढ़ी के छात्र एवं नवयुवकों से छत्तीसगढ़ की जनता बहुत कुछ उम्मीद करते हैं। छत्तीसगढ़ के जनता आज व्यवस्था में बुनियादी परिवर्तन की चाह लेकर छटपटा रहा है। एक “सुजलाम् सुफलाम् शस्य श्यामलाम्” छत्तीसगढ़ का सपना हम सबके दिल में है। “सर्वे भवन्तु सुखीना, सर्वे भवन्तु निरामया” की समतावादी विचारधारा का इतिहास को वैज्ञानिक समाजवादी सिद्धांत से जोड़कर नया छत्तीसगढ़ का निर्माण करना होगा। छात्र एवं नवयुवक वर्ग लहरों की तरह आगे बढ़ेंगे। इन्द्रावती, ईश, अरपा, महानदा, शंखोनी, शिवनाथ मिलकर एक अभूतपूर्व कलोच्छास और एक महाकल्लोल सृष्टि करेगा। फिर वनांचल से लेकर शहरांचल तक नवयुवक अर्जुन की तरह गांडाव पकड़कर छत्तीसगढ़ के शोषकों की किला को ध्वस्त कर धरती में मिला देंगे। नई पीढ़ी से यही उम्मीद है।

“नौजवान लोग समाज की सबसे अधिक सक्रिय और सबसे अधिक प्राणवान शक्ति होते हैं। उनमें सीखने की सबसे तीव्र इच्छा होती है, उनके विचारों में रूढ़िवाद का प्रभाव सबसे कम होता है।”

खूब लड़ी मर्दानी....



जिजि मंडेला

वर्ग-विभाजित समाज में कोई भी राजनीति से परे नहीं

अक्सर पूंजीपति वर्ग के प्रचार माध्यम कहता है कि- राजनीति बड़े-बूढ़े, बुद्धिजीवियों की उपज है, साधन सम्पन्न व्यक्तियों का काम है। मध्यम और निम्न-मध्यम वर्गीयों युवाओं को राजनीति से तालुकात नहीं रखना चाहिये। राजनीति को गंदा दलदल बताकर न केवल युवा पीढ़ी को बल्कि आम जनता को भी उससे बचने की सलाह दी जाती है। लेकिन वर्ग-विभाजित समाज में कोई भी राजनीति से परे नहीं हो सकता है।

वर्ग-विभाजित हमारा यह समाज.

हमारा यह समाज राजनीतिक और आर्थिक आधार पर जमींदार वर्ग, पूंजीपति वर्ग, निम्न-मध्यम वर्ग, अर्ध-सर्वहारा वर्ग और सर्वहारा वर्ग में बंटा हुआ है। जमींदार वर्ग में बड़े किसान और सामंत शामिल हैं। पूंजीपति वर्ग में राष्ट्रीय उद्योग पति, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के मालिक, बड़े-बड़े व्यापारी वगैरह आते हैं। निम्न-मध्यम वर्ग में छोटे-छोटे किसान, कुटीर उद्योगों के दस्तकार, स्कूलों के अध्यापक, छोटे-छोटे वकील, सरकारी और गैर सरकारी दफ्तरों के कर्मचारी, स्कूल-कालेजों के विद्यार्थी वगैरह को शामिल माना जा सकता है। अर्ध सर्वहारा वर्ग में उन छोटे किसानों हैं, जो आर्थिक कठिनाईयों के कारण अपनी खेती के अलावा दूसरों के लिये भी मजदूरी करते हैं। सर्वहारा वर्ग में वे शामिल हैं, जो उत्पादन के कार्य में तो लगा हुआ है, लेकिन उत्पादन के साधनों, खेतों और कल कारखानों के मालिक नहीं हैं। समाज का कोई भी मनुष्य इन वर्गों से परे नहीं है, वह जरूर किसी न किसी वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। जहां जमींदार और पूंजीपति वर्ग शोषकों की जमात में शामिल हैं, वहीं निम्न-मध्यम वर्ग, अर्ध सर्वहारा और सर्वहारा वर्गों के मनुष्य एक विशाल शोषित पीड़ित जन-समूह का निर्माण करते हैं।

कोई राजनीति से अलग नहीं हो सकता है .

आज ही नहीं बल्कि पृथ्वी पर राजसत्ता के अभ्युदय के समय से ही राजनीतिक फैसले मनुष्य के भाग्य का फैसला करते आ रहे हैं। चाहे वह राज-सत्ता द्वारा लिया गया युद्ध का फैसला हो, चाहे वह महंगाई

बढ़ाने के लिए हो कर बढ़ाने का निर्णय हो, आम आदमियों पर इन राजनीतिक फैसलों का प्रभाव तो पड़ता ही है, फिर कोई भी पीढ़ी चाहे वह युवा पीढ़ी ही क्यों न हो, स्वयं को राजनीति से अलग कैसे रख सकती है ? इस वर्ग विभाजित समाज में राजनीति का रिश्ता भी वर्गों पर आधारित होगा। जमींदार और पूंजीपति वर्ग के युवाओं की राजनीति तथा निम्न-मध्यम वर्ग अर्ध-सर्वहारा वर्ग के युवाओं की राजनीति में जमीन-असमान का अन्तर होगा। हमारा आशय शोषण-मूलक राजनीति और शोषण के खिलाफ संघर्ष की राजनीति से है।

पूंजीपति वर्ग के प्रचार माध्यम कहता है कि, वर्तमान राजनीति सिर्फ स्वार्थ पर टिकी है। इससे युवाओं को अलग रहना चाहिए, क्योंकि इनके आगे कर्तव्यों, दायित्वों और भविष्य निर्माण का सवाल होते हैं। निःसन्देह वर्तमान राजनीति स्वार्थ पर टिकी है, लेकिन यह स्वार्थ भी वर्गीय स्वार्थ होता है। शोषकों का स्वार्थ, पाड़ितों का स्वार्थ अलग किस्मों का होता है।

राजनीति को शोषकों से मुक्त करना होगा

राजनीति को साधन-सम्पन्न व्यक्तियों का काम बताकर देश के उन करोड़ों शोषित पीड़ित मनुष्यों का मजाक ही उड़ाया जाता है, जो साधन-सम्पन्न वर्ग की राजनीति के कारण ही आज मंहगाई, बेरोजगारी और गरीबी जैसी समस्याओं से घिरे हुए है। देश केवल साधन-सम्पन्न और खाये-पिये लोगों का नहीं है, यह राज सत्ता से वंचित करोड़ों मेहनत-कश लोगों का देश है। जहाँ तक मध्यम, निम्न-मध्यम वर्गीय युवाओं के भविष्य निर्माण का सवाल है, सच बात तो यह है कि, जब तक समाज का भविष्य उज्ज्वल नहीं होगा, तब तक युवाओं का व्यक्तिगत भविष्य भी हमेशा अनिश्चित और अंधकारमय रहेगा, जैसे कि आज है।

लेकिन अगर हम समाज का भविष्य उज्ज्वल बनाना चाहते हैं, तो हम निम्न मध्यम, अर्ध-सर्वहारा और सर्वहारा वर्ग के युवाओं को आम-जनता के साथ जुड़कर अमीरों के हाथों से राजसत्ता को छीनने के लिए संघर्ष करना होगा, राजनीति को शोषकों के खूनी पंजों से मुक्त कराकर उसे आम जनता के हाथों में सौंपना होगा। राजनीति को साधन-सम्पन्न व्यक्तियों का काम सोच कर उससे दूर रहने का मतलब है — अमर शहीद भगत

सिंह, चंद्रशेखर आजाद, खुदीराम बोस जैसे महान क्रांतिकारी युवाओं की शहादत को भूल जाना। ये क्रांतिकारी तो मध्यम या निम्न-मध्यम वर्गों से ही आये थे। स्वाधीनता और समानता के लिए इन्होंने अपने प्राणों की आहुति दी थी। क्या देश के इन महान क्रांतिकारियों के सपने सच हो गये? क्या महंगाई, गरीबी और बेरोजगारी के खौफनाक और शर्मनाक दृश्यों को देखकर भी हम स्वयं को एक आजाद मुल्क का निवासी मानने का वहम नहीं पाले हुए हैं।

राजनीति को “गंदा दल-दल” बताना भी दिग्भ्रमित दृष्टि कोण का परिचायक है। राजनीति अगर गंदा दल-दल होती तो स्कूल, कालेजों में राजनीति शास्त्र पढ़ाया ही क्यों जाता? वास्तव में, राजनीति समाज और अर्थ व्यवस्था की नियामक शक्ति है। यह शक्ति जिस वर्ग के हाथों में होगी, वही समाज व्यवस्था और अर्थ व्यवस्था का निर्धारण करेगा, और वह भी अपनी वर्गीय राजनीति के आधार पर। अलग-अलग वर्ग का अपना अलग-अलग राजनीतिक दृष्टि भी होता है।

मध्यम अथवा निम्न-मध्यम वर्ग के लोग राजनीति और क्रांति जैसे विषयों पर दुविधापूर्ण मनःस्थिति में होते हैं। लेकिन शोषकों और शोषितों के बीच वर्ग संघर्ष के तीव्र होने पर इन लोगों की राजनीतिक भूमिका बहुत निर्णायक हो जाती है। इतिहास में यह सिद्ध कर दिया है कि, इनमें से कुछ लोग क्रांतिकारियों का साथ देते हैं और कुछ क्रांति विरोधी पातों में शामिल हो जाते हैं। लेकिन ये कभी भी राजनीति से अलग या तटस्थ नहीं रह सकते, क्योंकि परिस्थितियाँ किसी को भी अलग या तटस्थ रहने की अनुमति नहीं देती।

राजनीति गंदा दल-दल नहीं है

पूंजीपति वर्ग के प्रचार माध्यमों राजनीति को गंदा दलदल बताकर आम जनता को उससे बचने की सलाह देती है, ताकि साधन सम्पन्न लोगों की राजनीति को आम जनता समझ न पाये, और उससे दूर रहे, परहेज करे, जिससे शोषकों की जमात बिना किसी विधन बाधा के आम जनता का शोषण जारी रख सके। इस प्रकार राजनीति से बचने की सलाह में भी राजनीति छुपी होती है। जहां तक मध्यम और निम्न-मध्यम वर्गीय युवा-पीढ़ी का सवाल है,

दुनिया की बदली हुई परिस्थितियों में क्या उनके लिए यह संभव है कि वह स्वयं को राजनीति से अलग कर सके ? जब क्रांति-पूर्व चीन में सरकारी तंत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार के खिलाफ मध्यम, निम्न-मध्यम और सर्वहारा वर्गों के युवाओं ने अपने क्रांतिकारी राजनीतिक आन्दोलन के जरिये दुनिया को झकझोर दिया, तब क्या भारत के छात्रों और युवाओं को पाठ्य पुस्तकों तथा डाक-सामग्रियों की मूल्य वृद्धि के बावजूद राजनीति से अलग रहना चाहिए ? क्या राजनीति से अलग रहकर महंगाई और बेरोजगारी को चुपचाप सहते चले जाना, या दिनों दिन महंगी होती जा रही शिक्षा पद्धति को चुपचाप झेलते चले जाना ही युवाओं के 'कर्तव्य' और 'भविष्य निर्माण' के सवाल का एक मात्र समाधान है ?

चाहिए एक सही विचारधारा-

राजनीति से दूर रहने से कोई समस्या का हल नहीं हो सकता । युवा पीढ़ी को आज चाहिए एक सही और क्रांतिकारी राजनीतिक विचार धारा, शोषण विहीन और वर्ग विहीन समाज निर्माण के लिए क्रांतिकारी वर्ग संघर्ष की विचार धारा ।

(नव-भारत १५-७-६० में प्रकाशित महासागर की एक लेख पर आधारित)

छत्तीसगढ़ के विकास में छात्र-वर्ग की भूमिका

भारत में प्रचलित शिक्षा-नीति हमेशा से चर्चित रही है। विभिन्न छात्र-संगठनों, राजनेताओं, शिक्षाविदों एवं बुद्धिजीवियों ने इस शिक्षा-नीति एवं व्यवस्था पर व्यापक टीका-टिप्पणी की है। प्रत्यक्ष रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनी, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान-परिषद, प्रान्तीय शिक्षा अनुसंधान परिषद, डी. आई. इ. टी., दून स्कूल की शैली के नवोदय विद्यालय भी बनाये जाते रहे, पर शिक्षा के मूलभूत ढाँचे में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति के ४३ वर्षों बाद हम यह सोचने को मजबूर हैं कि कदाचित् हमारी शिक्षा-नीति की कमजोरी ही भारत में अनिश्चितता के इस वातावरण को बनाने की जिम्मेदार है।

मुट्ठी भर गोरे शाषकों की मानसिकता से ओत-प्रोत, उनकी प्रशासनिक क्षमता को बढ़ाने के उद्देश्य से प्रेरित, शासक एवं शासितों के मध्य सेतु का कार्य करने के लिये, १८१३ सन में लार्ड मेकाले ने बाबूओं (क्लर्क) का एक वर्ग बनाने के उद्देश्य से आज की शिक्षा-नीति को बनाया था। पुराने जंग खाये मशीन पर रंग-रोगन लगाने की तरह हमारी शिक्षा-नीति ने भी कई जामे बदले पर, इसका हुलिया न बदला। अगर ऐसा न होता तो.....

- १) वर्तमान शोषण-ग्रस्त समाज अब तक अपरिवर्तित न रहता,
- २) हर शिक्षित व्यक्ति वर्तमान व्यवस्था की काल-सापेक्ष प्रासंगिकता छोड़ कर इस व्यवस्था की प्रशंसा का तोता रटत न रटता,
- ३) शिक्षितों का सुविधाभोगी वर्ग वृहत्तर समाज से स्वयं को काटकर अल्प संख्यक वर्ग की तरह व्यवहार न करना,
- ४) उत्पादक कार्यों से कटकर स्वयं शिक्षित वर्ग आम जनता से विलग न होता,
- ५) व्यवस्था-संचालन की सुविधार्थ बनाया गया दबू वर्ग उपनिवेश की समाप्ति के ४३ वर्ष बाद भी औपनिवेशिक मानसिकता से ग्रस्त न होता,
- ६) देश की जन-कल्याण मूलक भूमिका के विज्ञापन पर किये जाने वाले व्यय से भी कम शिक्षा हेतु न दी जाती।

देश की आवश्यकता एवं जनता की आवश्यकता की पूर्ति कर पाने में अक्षम है। इसका जीवंत उदाहरण देखिये: १९० वर्षों से विश्व-विद्यालयों की संख्या में १५० गुनी वृद्धि भले ही हुई हो, पर इतने वर्षों तक जीव-विज्ञान में सहस्रों वैज्ञानिक (?) बनाकर भी हमारे देश एक छोटे से जीव-मच्छर को अपनी गिरफ्त में न ले सका। मेलेरिया, एनकेफेलोइटिस आदि प्राणघातक रोगों के मूल में यही मच्छर हैं। कई जटिल बीमारियों के लक्षण कारण एवं उपचार जानने वाले चिकित्सा विद्यार्थी को आमतौर पर होने वाली उल्टी-टट्टी पर जीवन रक्षा करने वाले नमक-शक्कर के घोल की जानकारी नहीं दी जाती। तकनीकी-शिक्षा के क्षेत्र में सर्वाधिक प्रतिस्पर्धा सिविल-इंजीनियरिंग में दाखिले के लिए होती है, ताकि पी. डब्लू. डी. या सिचाई विभाग में वह रही विकास की गंगा में डुबकी लगाने का मौका मिले। सच और झूठ, आवश्यक और अनावश्यक, न्याय और अन्याय में फर्क कर सकने की क्षमता को ही इस शिक्षा व्यवस्था ने कुंठित कर दिया है। यही कारण हैं कि एक वलात्कारी, डकैत या कार्य-कर्ता तीनों के प्रति कानून व्यवस्था सम भाव रखती है, — कार्यकर्ता को वकील भले न मिले, पर वलात्कारी, डकैतों, अपराधियों को अच्छे वकीलों की सेवाएं सदैव उपलब्ध होती है।

ग्रामीण एवं शहरी नागरिक-सुविधाओं के बीच बढ़ती खाई हमारी शिक्षा-व्यवस्था पर भी लागू होती है। एक ओर शहरी 'इंडिया' के स्कूलों में प्राप्त आधुनिक सुविधाओं से सज्जित प्रयोगशालाएं एवं उच्च सम्मान प्राप्त शिक्षक तथा महाविद्यालयों में विदेशों से आये अतिथि प्राध्यापकों की भीड़ है (जैसे कि दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू विश्व-विद्यालय में), हर एक छात्र पर हजारों रुपये प्रतिमाह व्यय होता है। वहीं ग्रामीण "भारत" में गरीब बच्चों की ५ कक्षाओं के लिए २ कमरे हैं तथा कई बार एक मात्र शिक्षक उपलब्ध है। ऐसी हालत में शहरी छात्रों के मुकाबले ग्रामीण अंचल के छात्रों का किसी भी प्रतियोगिता में टिकना लगभग असंभव होता है। इस दौड़ में मध्यम-वर्गीय परिवारों के छात्र भी मेधावी होने के बावजूद आर्थिक सीमाओं के कारण प्रतिष्ठित (सफल) नहीं हो पाते। फलतः इस शिक्षा-पद्धति से निराश की जमात ही पैदा होती है। अति अल्प मात्रा में लोग अपने मनानुकूल काम पर जा पाते हैं। शारीरिक श्रम एवं उपयोगिता की ओर से विमुख इस

शिक्षा-पद्धति के द्वारा निर्मित शिक्षित बेकार (सुखियार) होकर एक सामाजिक बोझ बन जाते हैं। समाज के लिए अनुपयोगी, स्वयं को बेकार मानने वालों की यह फौज चंद असामाजिक तत्वों तथा स्वार्थी राजनेताओं के चंगुल में पड़कर अराजकता के वातावरण को उग्रता प्रदान करती है।

छत्तीसगढ़ के संदर्भ में भी उपरोक्त तथ्य समान रूप से लागू होते हैं, बल्कि छत्तीसगढ़ की हालत तो अन्य क्षेत्रों से बदतर है। क्योंकि यहां शहर और गांव के बीच फर्क की खाई और भी अधिक गहरी है। गांवों में शोषण कर रहे लोग भी स्वयं शहरी शोषण का शिकार हैं, क्योंकि शहरों की शिक्षा, व्यापार और राजनीति पर स्वार्थी तत्व ही हावी हैं।

आज जबकि अन्य प्रान्तों में छात्र-राजनीति में विकास की मुख्य धारा से जुड़ने की जी तोड़ कोशिश जारी है, वहां छत्तीसगढ़ में आज भी सचेत छात्र-संगठन न होने के कारण छात्रों की राजनीति का अपना स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। इस कठपुतली छात्र-नेताओं के नियंत्रण की बगडोर कहीं और से नियंत्रित होती हैं। यही कारण है कि इस पर नियंत्रण की प्रतिस्पर्धा में जो ताम-झाम और खर्च होता है वह विधानसभा के चुनाव से किसी तरह कम नहीं हैं।

हमें भी दुनिया के नवयुवकों, छात्रों को कदम से कदम मिलाकर चलना होगा। हमें भी भारत के अगुवा छात्र-वर्ग के कंधे से कंधा मिलाकर चलना होगा। इतिहास के पन्नों से हमें यह शिक्षा मिलती है कि विद्यार्थी स्वयं पुस्तकों एवं पुस्तकालयों से शिक्षित होता है, एवं किसानों, मजदूरों तक अपनी शिक्षा द्वारा अर्जित ज्ञान का प्रकाश पहुंचाता है। जब देश की जनता राजनैतिक दिशाहीनता का शिकार हो, उस समय छात्र समाज जैसे क्रान्तिकारी वर्ग ही समाज को गुणात्मक परिवर्तन की ओर प्रेरित करने के लिए कूद पड़ते हैं। हमारे देश की आजादी की लड़ाई में भी छात्र समाज ने अपनी जिम्मेदारी निभाकर मिशाल कायम की। १९१७ की रूसी क्रांति, चीन में सामन्त-साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष में भी छात्र-समाज की भूमिका स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। १९६८ का फ्रांसीसी छात्र-आन्दोलन ने तो एक विद्रोह का रूप ले लिया था, जिसमें लाखों मजदूरों-किसानों ने सक्रिय हिस्सा लिया।

आज भारत के विभिन्न प्रांतों में विशेषतः महाराष्ट्र, केंरल, बंगाल, आंध्र, उत्तर खण्ड, पंजाब, झारखण्ड आदि क्षेत्रों के छात्र-आंदोलनों से समाजिक परिवर्तन हेतु अपनी जिम्मेदारी निभाने को संकल्पित है। असम में छात्र-आन्दोलन ने राज्य-सरकार भी बनवाया तथा छात्र मुख्यमंत्री भी दिया। आज भी वहां का “आसू” मुद्दों की राजनीति से हटा नहीं है। छत्तीसगढ़ के छात्र-आन्दोलन में भी दिशा-प्रेरक के रूप में ७०वें दशक का अंग्रेजी विरोधी आन्दोलन अथवा जगदलपुर में एक महिला के बलात्कार के विरोध में हुए आंदोलन है। चांपा में पेयजल की मांग को लेकर किये गये आन्दोलन का नेतृत्व भी छात्रों ने दिया जिसमें एक छात्र शहीद हो गये। व्यापक क्षेत्र में अलग-अलग होने वाले इन प्रयासों के बावजूद सम्यक दृष्टि कोण के अभाव छत्तीसगढ़ का यह आन्दोलन को स्पष्ट दिशा दे पाने की स्थिति में न आ सका। कभी विन्दा काण्ड जैसी घटनायें या छात्र-आंदोलनों के नेता डा. काम्बले जैसे लोगों की हरकतों- इन हादसों से हमारे छत्तीसगढ़ में प्रगतिशील छात्र-आंदोलन का स्वप्न को एक ठेस लगती हैं और कुछ बिखर सा जाता है।

सबसे खतरनाक होता है हमारे सपनों का मर जाना। (अवतार सिंह पाश)

हमारे छत्तीसगढ़ के समस्त विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्व-के छात्र-छात्राओं, वर्तमान परिस्थिति में छत्तीसगढ़ के विकास के प्रश्न पर चिन्ता करना निहायत जरूरी है। हम कुंठाओं को हटाने एवं समाज को प्रतिष्ठित करने वाले एक ऐसे छात्र-आन्दोलन का सूत्रपात करें, जिससे छत्तीसगढ़ की मौजूदा समस्यायें ही छत्तीसगढ़ के विकास का आधार बन सके, बेरोजगारी, भुखमरी, पलायन, अशिक्षा, कुस्वास्थ्य से ग्रस्त हमारे देश-वासियों के मुक्ति का राह प्रशस्त कर सकें।

हमारे देश-प्रेम की पहचान.....

हमारा छत्तीसगढ़.

छोटा और सुन्दर राज्य छत्तीसगढ़.

नये भारत के लिए नया छत्तीसगढ़.

शोषण विहीन छत्तीसगढ़.

हमारे सपनों का छत्तीसगढ़.

आइये हम सब मिलकर अपना सपना साकार करें।

उम्र १८ साल की

तरुणाई की चरम अवस्था से,
यौवन में पदार्पण,
यानी, उम्र १८ साल की ॥

मसैं भरतीं, फड़कती बाहें,
तना सीना, गर्वोन्नत ललाट,
रोड़ा हटाता जो मारकर लात,
ऐसी दुर्धर्ष, साहसी, उम्र होती है १८ साल की.....

नहीं पसंद इस उम्र को रोना,
जानता नहीं किसी के सामने गिड़गिड़ाना,
विवशता ?
विवशता क्या चीज होती है ?
विवश की क्या खीझ होती है ?
यह भी इसने न जाना,
१८ की उम्र ने न जाना,
संभव ही संभव लगता है सब कुछ इस उम्र में,
ऐसी होती है उम्र १८ साल की.....

प्रचण्ड वेगवती धार पर बह रही नाव,
पवन-गति से चल रही, जिसका नहीं कोई ठहराव,
नाविक सम्हलना, दुष्वार है धार,
सम्हलकर अगर न चलाये पतवार,
डूब जाते हैं अकारण प्राण कई हजार,
ऐसी होती है यह उम्र १८ साल की.....

चाहत से भरा दिल, आंखों में सपना,
ज्ञान दे देने और ले लेने तक का साहस,

कुछ कर गुजरने की तमन्ना,
हृदय सुरभित पुष्प सम तनु नव विचारों से,
तरुणाई की चरम अवस्था से,
यौवन में पदार्पण,
यानी, उम्र १८ साल की.....

सरफरोशी के लिए रहकर तत्पर,
मात दे तुफान को हर चाल पर,
प्राणघाती, क्रूर, कठोर प्रहार भी सहकर,
चलना चाहता सदा उन्मुक्त, बंधन तोड़कर,
दूर.....जड़ता को हटाता खूब दूर.....
भय की छाया भी बने कैसे अभय की रोशनी में,
भले करना पड़े मरण का वरण १८ की उम्र में,
ऐसी होती हैं यह उम्र १८ साल की.....

ओह ! उम्र १८ साल की !! ये क्या कुछ नहीं करना चाहती,
हर एक का दर्द अपने दिल में लेकर,
हर नई रोशनी को ललायित सतत पूर्वाभिमुख रहकर,
फाड़कर रख दे कलेजा, जिनसे प्रश्रय पाये विनाश,
ताकि, अपनी चाहत के मुताबिक, कर सके सृष्टि का विकास,
तभी से संतुष्ट एक उच्छवास.....

तरुणाई पार कर यौवन की दहलीज पर खड़े युवकों,
मत भूलो, अभी तुम हो १८ साल के,
१८ साल की उम्र,
जो नहीं जानती डरना,
नहीं जानती रुकना,
चलती है लगातार संघर्ष के पथ पर.....

सलामत रहे यह तुम्हारी तरुणाई का यौवन/यौवम की अरुणिमा,
कि सारा देश, भूलकर अपनी कालगत उम्र.

हो जाये नव उर्जापूरित युवा,
महसूस करे अपनी वही उम्र, उम्र १८ साल की,
सलामत रहे यह उम्र १८ साल मेरे देश की,
इस उम्र को सलाम ! अरुण यौवन को सलाम !!

(सुकांत भट्टाचार्य की एक कविता
का अनुवाद प्रयास)

एक दिन का सपना

एक दिन

जब

सब को पीने का पानी मिलेगा

जब

सब को पेट भर खाना मिलेगा

जब

सब को रहने का घर होगा

जब

बच्चों की आँखों में चमक होगी

जब

शोषक, पूँजीपति भागेंगे

वह दिन कब आयेगा ?

जब मजदूर का राज होगा



छत्तीसगढ़ स्टुडेंट्स फेडरेशन

के

कार्यक्रम

पूरे छत्तीसगढ़ के छात्र-छात्राओं को संगठित कर नया छत्तीसगढ़ के निर्माण के लिए आन्दोलन करना ।

हम वर्तमान गलत शिक्षा नीति के खिलाफ संघर्ष करेंगे । हम संघर्ष करेंगे—

- क— गांव व शहर के शिक्षा सुविधाओं में समानता लाने के लिये,
- ख— तकनीकी ज्ञान देने वाली एवं स्वनिर्भर इन्सान बनाने वाली शिक्षा प्रणाली की स्थापना के लिए,
- ग— जनोपयोगी शिक्षा व्यवस्था लागू करने के लिये,
- घ— शिक्षा के क्षेत्र में भ्रष्टाचार को रोकने के लिये,
- ङ— अपसंस्कृति और अंधविश्वास के खिलाफ, दुसुम-दुसुम कराटे कुंफु संस्कृति के खिलाफ, सेक्स संस्कृति के खिलाफ नई जनवादी संस्कृति के निर्माण के लिये ।

जिन क्रांतिकारियों ने नये भारत के निर्माण के सपनों को लेकर हमें बलिदान की भावना से प्रेरित किया, उनके जीवन व कर्म से शिक्षा लेते हुए हम उनके अधूरे सपनों को सफलता की मंजिल तक पहुंचाने की प्रेरणाभूलक शिक्षा पद्धति का कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे ।

हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब एक दिन
मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब, एक दिन ।

“यह दुनिया तुम्हारी है, यह हमारी भी है लेकिन अन्ततोगत्वा यह तुम्हारी ही होगी । तुम नौजवान लोग ओजस्विता और जीवन-शक्ति से भरपूर सुबह या नौ बजे के सूरज की तरह अपनी जिन्दगी की पुरबहार मंजिल में हों । हमारी आशाएं तुम पर लगी हुई हैं । यह दुनिया तुम्हारे ही हाथों में है,”

“ कोई नौजवान क्रांतिकारी है अथवा नहीं यह जानने की कसौटी क्या है ? उसे कैसे पहचाना जाय ? इसको कसौटी केवल एक है, यानि यह देखना चाहिए कि वह व्यापक मजदूर-किसान जनता के साथ एक रूप हो जाना चाहता है अथवा नहीं, तथा इस बात पर अमल करता है अथवा नहीं ? क्रांतिकारी वह हैं जो मजदूरों व किसानों के साथ एक रूप हो जाना चाहता हो, और अपने अमल में मजदूरों व किसानों के साथ एक रूप हो जाता हों ”